NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 30-11-2024

विषय सूची

भारतीय पर्यटन क्षेत्र का उत्थान

ओडिशा सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) विधेयक, 2024

त्वरित डिग्री कार्यक्रम (ADP) और विस्तारित डिग्री कार्यक्रम (EDP)

सरकार द्वारा बीमा क्षेत्र में 100% FDI का प्रस्ताव

वैश्विक वेतन रिपोर्ट 2024-25: ILO

भारत में गिग और प्लेटफॉर्म वर्कर्स की संख्या

संक्षिप्त समाचार

रामप्पा मंदिर

ज्योतिबा फुले

बाल्टिक सागर

कोरगा जनजातीय समुदाय

नियम 267

नेफिथ्रोमाइसिन (Nafithromycin)

आठ प्रमुख उद्योगों का सूचकांक (ICI)

CAFE मानदंड

भारतीय सेना द्वारा एकलव्य डिजिटल प्लेटफॉर्म लॉन्च

भारतीय पर्यटन क्षेत्र का उत्थान

समाचार में

- केंद्र ने राज्यों में पर्यटन बुनियादी ढांचे के विकास के लिए ब्याज मुक्त ऋण में ₹3,295 करोड़ की मंजूरी दी है।

परिचय

- केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने ऋणों को मंजूरी दे दी, जो पूंजी निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता (SASCI) योजना के तहत वितरित किए जा रहे हैं।
  - ऋण दीर्घकालिक, ब्याज मुक्त हैं और 50 वर्षों में चुकाए जाएंगे।
  - इसका उद्देश्य प्रतिष्ठित पर्यटन केंद्रों को विकसित करना, वैश्विक ब्रांडिंग को बढ़ाना और स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देना है जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है और रोजगार सृजित करता है।
- राज्यों को बटेश्वर (उत्तर प्रदेश), पोंडा (गोवा), गांडीकोटा (आंध्र प्रदेश) और पोरबंदर (गुजरात) जैसे कम प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
  - 23 राज्यों में 40 नई पर्यटन परियोजनाओं की पहचान की गई है।

भारत के पर्यटन क्षेत्र का विकास:

- भारत, विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक, एक बहुसांस्कृतिक संगम स्थल है।
- भारत का पर्यटन उद्योग अपनी समृद्ध विरासत, सांस्कृतिक विविधता और खूबसूरत स्थलों के कारण वैश्विक पसंदीदा बन रहा है, जो आर्थिक विकास एवं रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।
  - 2022-23 में पर्यटन क्षेत्र में 76.17 मिलियन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित हुए, जबकि 2021-22 में 70.04 मिलियन।
- **पर्यटन के लिए सरकारी बजट:** FY25 के लिए, सरकार ने पर्यटन क्षेत्र को और विकसित करने के लिए ₹2,479 करोड़ आवंटित किए हैं।
- **वैश्विक रैंकिंग:** भारत यात्रा और पर्यटन विकास सूचकांक 2024 (TTDI) में 119 देशों में 39वें स्थान पर है, इसमें सुधार के साथ:
  - यात्रा और पर्यटन, सुरक्षा एवं सुरक्षा, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता को प्राथमिकता देना।
- **विदेशी पर्यटक आगमन (FTAs):** 2023 में, भारत ने 9.24 मिलियन FTAs दर्ज किया, जो 2022 (6.44 मिलियन) की तुलना में 43.5% की वृद्धि है।
  - FTAs से विदेशी मुद्रा आय (FEEs) 65% बढ़ी, जो 2023 में ₹2.3 लाख करोड़ तक पहुंच गई।
  - **FTAs बढ़ाने के उपाय:** साहसिक और विशिष्ट पर्यटन को बढ़ावा देना।
    - ई-वीजा तक आसान पहुंच।
    - पर्यटकों के लिए 24x7 बहुभाषी हेल्पलाइन का शुभारंभ।
    - बेहतर पर्यटक अनुभव के लिए पर्यटन दीदी और पर्यटन मित्र का शुभारंभ।
  - 2023 में, 2,509.63 मिलियन घरेलू पर्यटक दौरे (DTVs) दर्ज किए गए, जो 2022 में 1,731.01 मिलियन से अधिक है।

सरकार की पहल

- सरकार क्षेत्र की वृद्धि को बढ़ाने के लिए तकनीकी एकीकरण के साथ-साथ साहसिक पर्यटन और सतत पर्यटन को प्राथमिकता दे रही है।
- **बुनियादी ढाँचा निवेश:** भारत ने पर्यटक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए पर्यटन बुनियादी ढाँचे के निर्माण में लगभग ₹7,000 करोड़ (लगभग $1 बिलियन) का निवेश किया है।

- देखो अपना देश, प्रसाद, वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम, स्वदेश 2.0 और उड़ान जैसी पहल का उद्देश्य घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देना है।

चुनौतियां

- **बुनियादी ढांचे की कमी:** दूरदराज के क्षेत्रों में खराब कनेक्टिविटी, ग्रामीण स्थलों में सीमित गुणवत्ता वाले आवास और अपर्याप्त बुनियादी सुविधाएं।
- **सुरक्षा और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** अपराध, बीमारी फैलने से स्वास्थ्य जोखिम और कुछ क्षेत्रों में राजनीतिक अस्थिरता जैसे मुद्दे पर्यटकों को रोक सकते हैं।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** शहरी क्षेत्रों में प्रदूषण, अत्यधिक पर्यटन के कारण लोकप्रिय स्थलों का क्षरण, और संवेदनशील क्षेत्रों में पर्यटन के कारण वन्य जीवन एवं पारिस्थितिकी तंत्र को संभावित नुकसान।
- **सांस्कृतिक संवेदनशीलताएँ:** पर्यटक अनजाने में स्थानीय रीति-रिवाजों का अनादर कर सकते हैं, और बढ़ा हुआ पर्यटन सांस्कृतिक और विरासत स्थलों के संरक्षण को खतरे में डाल सकता है।
- **विपणन और प्रचार:** अपर्याप्त जागरूकता और "अतुल्य भारत" जैसे अप्रभावी ब्रांडिंग अभियान देश के विविध आकर्षणों को उजागर करने में विफल रहते हैं।
- **कौशल विकास:** पर्यटन उद्योग में प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी है और विदेशी पर्यटकों के लिए भाषा संबंधी बाधाएँ हैं।

निष्कर्ष और आगे की राह

- सरकारी पहल, बुनियादी ढांचे के विकास और वैश्विक ब्रांडिंग के कारण भारत के पर्यटन उद्योग ने उल्लेखनीय वृद्धि देखी है।
- सरकार पर्यटन को सामाजिक समावेशन, रोजगार और आर्थिक प्रगति के चालक के रूप में देखती है, जो 2047 तक भारत को एक विकसित देश बनाने की दिशा में कार्य कर रही है।
- टिकाऊ पर्यटन और तकनीकी एकीकरण पर निरंतर ध्यान देने से इस क्षेत्र को प्रोत्साहन मिलने की सम्भावना है।

Source: TH

ओडिशा सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) विधेयक, 2024

सन्दर्भ

- ओडिशा सरकार राज्य की सार्वजनिक परीक्षाओं में धोखाधड़ी और अन्य विसंगतियों को रोकने के लिए कड़े आपराधिक प्रावधानों वाला एक नया कानून बनाने जा रही है।

परिचय

- इस कानून को ओडिशा सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) विधेयक, 2024 के रूप में जाना जाता है।
- इस कानून का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों, संगठित समूहों या संस्थानों को प्रभावी ढंग से एवं कानूनी रूप से रोकना होगा जो विभिन्न अनुचित तरीकों में लिप्त होते हैं और मौद्रिक या अनुचित लाभ के लिए सार्वजनिक परीक्षा प्रणाली पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।
- फिलहाल ओडिशा में परीक्षाओं में नकल रोकने के लिए कोई विशेष कानून नहीं है।

भारत में सार्वजनिक परीक्षाओं में विसंगतियों के नवीनतम मामले

- राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) ने प्रकटीकरण किया कि अकेले वर्ष 2018 में परीक्षा कदाचार के लगभग 2,000 मामले दर्ज किए गए हैं।

- राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (स्नातक) के प्रश्न पत्र लीक करने के आरोप में बिहार राज्य में चार लोगों को गिरफ्तार किया गया।
- उत्तर प्रदेश में समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी पद के लिए अर्हकारी परीक्षा पेपर लीक के आरोपों के बीच रद्द कर दी गई।
- इन कदाचारों का छात्रों पर गंभीर वित्तीय और मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, और संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को इनसे निपटने के लिए मजबूत उपायों की आवश्यकता है।

परीक्षा में कदाचार का प्रभाव:

- **शैक्षिक अखंडता को कमज़ोर करता है:** जब धोखाधड़ी और कदाचार व्यापक हो जाते हैं, तो यह परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता को समाप्त कर देता है।
- **योग्यताओं का अवमूल्यन:** जब कदाचार परीक्षाओं की विश्वसनीयता को प्रभावित करते हैं, तो शैक्षणिक संस्थानों द्वारा दी गई योग्यताओं का मूल्य कम हो जाता है, जिससे सभी छात्रों की रोजगार क्षमता और भविष्य की संभावनाएं प्रभावित होती हैं।
- **प्रणाली में विश्वास की हानि:** माता-पिता और जनता का शिक्षा प्रणाली में विश्वास कम हो जाता है।
- **छात्रों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव:** कदाचार के प्रसार से छात्र निराश और हतोत्साहित महसूस करते हैं।
- **परीक्षाओं में देरी:** सार्वजनिक परीक्षाओं में कदाचार के कारण देरी होती है और परीक्षाएं रद्द हो जाती हैं, जिससे लाखों युवाओं की संभावनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **अतिरिक्त लागत:** परीक्षा पुनः आयोजित करने के लिए सरकार को अतिरिक्त वित्तीय भार उठाना पड़ता है।

सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024

- अधिनियम मोटे तौर पर विभिन्न कदाचारों को शामिल करने के लिए "अनुचित साधनों" को परिभाषित करता है, जैसे:
  - प्रश्न पत्र या उत्तर कुंजी लीक होना,
  - परीक्षा के दौरान अभ्यर्थियों की सहायता करना (अनधिकृत संचार, समाधान प्रदान करना),
  - कंप्यूटर नेटवर्क या संसाधनों के साथ छेड़छाड़,
  - उम्मीदवारों का प्रतिरूपण करना,
  - फर्जी परीक्षाएं आयोजित करना या फर्जी दस्तावेज जारी करना,
  - योग्यता सूची या रैंक के लिए दस्तावेजों के साथ छेड़छाड़।
- **दंड और सज़ाएँ:**
  - एकल(indivisual):
    - अपराध की गंभीरता के आधार पर कारावास 3 से 10 वर्ष तक हो सकता है।
    - रुपये तक का जुर्माना संगठित अपराधों के लिए 1 करोड़ रु.
  - सेवा प्रदाता(Service providers):
    - कदाचार में संलिप्तता के लिए 1 करोड़ रुपये तक का जुर्माना
    - 4 वर्षों के लिए सार्वजनिक परीक्षाएँ आयोजित करने पर रोक।
    - इसमें शामिल निदेशकों/प्रबंधन के लिए व्यक्तिगत दायित्व।
  - संगठित अपराध:

- कठोर दंड, 5 से 10 वर्ष के बीच कारावास और न्यूनतम रु. 1 करोड़ का जुर्माना।
- संबंधित संस्था को संपत्ति कुर्की और जब्ती का सामना करना पड़ सकता है

- **जांच(Investigation):**
  - अधिनियम के तहत सभी अपराध संज्ञेय, गैर-जमानती और गैर-शमनयोग्य हैं।
  - उपाधीक्षक या सहायक पुलिस आयुक्त रैंक से नीचे का अधिकारी अधिनियम के तहत अपराधों की जांच नहीं करेगा।
  - केंद्र सरकार जांच को किसी भी केंद्रीय जांच एजेंसी को स्थानांतरित कर सकती है।

Source: IE

त्वरित डिग्री कार्यक्रम (ADP) और विस्तारित डिग्री कार्यक्रम (EDP)

सन्दर्भ

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने हाल ही में उच्च शिक्षा संस्थानों (HEIs) के लिए त्वरित डिग्री कार्यक्रम (ADP) और विस्तारित डिग्री कार्यक्रम (EDP) की पेशकश के लिए एक मानक संचालन प्रोटोकॉल (SOP) को मंजूरी दे दी है।

ADPs और EDPs क्या हैं?

- पहले या दूसरे सेमेस्टर के अंत में, लेकिन उससे आगे नहीं, स्नातक छात्रों को ADP या EDP चुनने की अनुमति दी जाएगी।
- ADP के तहत नामांकित छात्र समान पाठ्यक्रम का पालन करेंगे और उन्हें तीन या चार वर्ष के स्नातक (UG) कार्यक्रम के लिए आवश्यक समान संख्या में क्रेडिट अर्जित करना होगा। हालाँकि, वे ADP चुनने वाले सेमेस्टर से शुरू होने वाले अतिरिक्त क्रेडिट अर्जित करके अपना कार्यक्रम जल्दी पूरा कर सकते हैं।
- ADP के तहत, तीन वर्ष के UG कार्यक्रम को मानक छह (अधिकतम एक सेमेस्टर से छोटा) के बजाय पांच सेमेस्टर में पूरा किया जा सकता है, जबकि चार वर्ष के UG कार्यक्रम को छह या सात सेमेस्टर (अधिकतम से छोटा) में पूरा किया जा सकता है। आठ के बजाय दो सेमेस्टर का)।
- दूसरी ओर, जो छात्र EDPs चुनते हैं, उन्हें मानक कार्यक्रम की तुलना में प्रति सेमेस्टर कम क्रेडिट अर्जित करने की अनुमति दी जाएगी, जिससे उन्हें अपना पाठ्यक्रम पूरा करने में अधिक समय लगेगा।
- सरकारी विभाग, निजी संगठन और UPSC/राज्य सेवा आयोग जैसी भर्ती एजेंसियां, ADP और EDPs को मानक अवधि के समान मानेंगे।

इन्हें कैसे क्रियान्वित किया जाएगा?

- HEIs पहले या दूसरे सेमेस्टर के अंत में ADP और EDP के लिए प्राप्त आवेदनों की जांच करने और तदनुसार छात्रों का चयन करने के लिए समिति का गठन करेगी।
- एक संस्थान ADP छात्रों के लिए स्वीकृत प्रवेश का 10% तक निर्धारित कर सकता है, जबकि EDP छात्रों की संख्या पर कोई सीमा नहीं होगी।
- HEIs 2025-26 शैक्षणिक वर्ष से ADP या EDP की पेशकश शुरू कर सकते हैं, इन कार्यक्रमों को लागू करने का विकल्प संस्थानों पर छोड़ दिया गया है।

महत्व

- ADP उच्च प्रदर्शन करने वाले छात्रों को अपनी डिग्री तेजी से पूरी करने की अनुमति देता है और उन्हें कार्यबल में प्रवेश करने या जल्द ही उच्च अध्ययन करने की अनुमति देता है।
- यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुसार पिछले वर्ष जारी नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क (NCrF) के अनुरूप था।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)

- यह 28 दिसंबर, 1953 को अस्तित्व में आया और 1956 में संसद के एक अधिनियम द्वारा भारत सरकार का एक वैधानिक संगठन बन गया।
- UGC के अधिदेश में शामिल हैं:
  - विश्वविद्यालय शिक्षा को बढ़ावा देना और समन्वय करना।
  - विश्वविद्यालयों में शिक्षण, परीक्षा और अनुसंधान के मानकों का निर्धारण एवं रखरखाव करना।
  - विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों को अनुदान संवितरित करना।
  - संघ एवं राज्य सरकारों और उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच एक महत्वपूर्ण संपर्क के रूप में कार्य करना।
  - विश्वविद्यालय शिक्षा में सुधार के लिए आवश्यक उपायों पर केंद्र और राज्य सरकारों को परामर्श देना।

Source: IE

सरकार द्वारा बीमा क्षेत्र में 100% FDI का प्रस्ताव

सन्दर्भ

- केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की सीमा 74% से बढ़ाकर 100% करने का प्रस्ताव करते हुए एक परामर्श पत्र जारी किया।

परिचय

- बीमा क्षेत्र में FDI की सीमा पहले फरवरी 2021 में 49% से बढ़ाकर 74% कर दी गई थी।
- बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI) और उद्योग के परामर्श से क्षेत्र के विधायी ढांचे की व्यापक समीक्षा की गई है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)

- यह एक देश की किसी कंपनी या व्यक्ति द्वारा दूसरे देश की संपत्ति, व्यवसाय या उत्पादन गतिविधियों में किए गए निवेश को संदर्भित करता है।
- **महत्व**
  - यह पूंजी, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन विशेषज्ञता लाकर अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है, जो मेजबान देश में उत्पादकता एवं नवाचार को बढ़ाता है।
  - यह विशेष रूप से विनिर्माण, सेवाओं और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करता है।

- यह कौशल और प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है, जिससे घरेलू कंपनियों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है।

बीमा कानूनों में प्रस्तावित संशोधन:

- इसका उद्देश्य नागरिकों के लिए बीमा की पहुंच एवं सामर्थ्य सुनिश्चित करना, बीमा उद्योग के विस्तार तथा विकास को बढ़ावा देना और व्यावसायिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना है।
- विदेशी पुनर्बीमाकर्ताओं के लिए शुद्ध स्वामित्व निधि को भी 5,000 करोड़ रुपये से घटाकर 1,000 करोड़ रुपये करने का प्रस्ताव है।
- IRDAI को विशेष मामले के आधार पर कम सेवा प्राप्त या असेवित क्षेत्रों के लिए कम प्रवेश पूंजी (50 करोड़ रुपये से कम नहीं) निर्दिष्ट करने का अधिकार दिया जा रहा है।
- बीमा एजेंटों के लिए खुली संरचना जो उन्हें एक से अधिक जीवन, सामान्य और स्वास्थ्य बीमा कंपनियों के साथ जुड़ने की अनुमति देगी।
    - वर्तमान में, बीमा एजेंटों को केवल एक जीवन, सामान्य और स्वास्थ्य बीमा कंपनी के साथ संबद्ध होने की अनुमति है।

संशोधन की आवश्यकता

- नियामक क्षेत्र पूंजी-प्रधान उद्योग में अधिक पूंजी आकर्षित करने के प्रयास कर रहा है।
- देश में बीमा पहुंच को दोगुना करने के लिए बीमा क्षेत्र को वार्षिक लगभग ₹50,000 करोड़ निवेश करने की आवश्यकता है।
    - बीमा पैठ से तात्पर्य किसी विशेष वर्ष में लिखे गए बीमा प्रीमियम और सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के अनुपात से है।
- वर्तमान में बिना बीमा वाले व्यक्तियों और संपत्तियों के लिए बीमा कवरेज का विस्तार करके भारत वार्षिक 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक बचा सकता है।
    - भारत की जनसँख्या का एक बड़ा हिस्सा अभी भी बीमा के बिना है, देश को महत्वपूर्ण जोखिमों का सामना करना पड़ता है, जिसमें जेब से अधिक व्यय भी शामिल है।
- उद्योग की चुनौतियों से निपटने के लिए आक्रामक योजनाओं के साथ, IRDA '2047 तक सभी के लिए बीमा' के अपने मिशन को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत में बीमा क्षेत्र

- भारत विश्व के उभरते बीमा बाजारों में पांचवां सबसे बड़ा जीवन बीमा बाजार है, जो प्रत्येक वर्ष 32-34% की दर से बढ़ रहा है।
- **बीमा प्रवेश:** आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के अनुसार, देश में समग्र बीमा प्रवेश वित्त वर्ष 2013 में थोड़ा कम होकर 4% हो गया, जो वित्त वर्ष 2012 में 4.2% था।
    - इसी अवधि के दौरान, जीवन बीमा खंड में बीमा प्रवेश वित्त वर्ष 2012 में 3.2% से घटकर वित्त वर्ष 2013 में 3% हो गया, जबकि गैर-जीवन बीमा खंड के लिए यह 1% पर स्थिर रहा।
- **बीमा कंपनियाँ:** वर्तमान में, देश में 25 जीवन बीमा कंपनियाँ और 34 सामान्य बीमाकर्ता हैं।
    - जीवन बीमा कंपनियों में, जीवन बीमा निगम (LIC) एकमात्र सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी है।
    - इनके अतिरिक्त, एक एकमात्र राष्ट्रीय पुनर्बीमाकर्ता है, जिसका नाम है जनरल इंश्योरेंस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (GIC Re)।

सेक्टर के समक्ष चुनौतियाँ

- **कम पहुंच:** बीमा के लाभों और प्रकारों के बारे में जनसँख्या के बीच सीमित जागरूकता के साथ, बीमा की पहुंच कम बनी हुई है।
- **दावा निपटान मुद्दे:** दावा प्रक्रिया में देरी, अस्वीकृति और पारदर्शिता की कमी ग्राहक असंतोष उत्पन्न करती है।
- **वितरण सीमाएँ:** ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित पहुंच है, और बीमा वितरण शहरी-केंद्रित बना हुआ है, जो एजेंटों पर बहुत अधिक निर्भर है।
- **सामर्थ्य:** उच्च प्रीमियम और कुछ उत्पादों की कम कीमत निम्न-आय समूहों के लिए पहुंच को प्रभावित करती है।
- **धोखाधड़ी और गलत बिक्री:** एजेंटों द्वारा धोखाधड़ी के दावे और गलत बिक्री सामान्य समस्याएं हैं, जो ग्राहकों के विश्वास को हानि पहुंचाती हैं।
- **स्वास्थ्य बीमा अंतराल:** सीमित कवरेज और उच्च चिकित्सा लागत स्वास्थ्य बीमा को अपर्याप्त बनाती है।
- **बढ़ती लागत:** बढ़ती चिकित्सा और दावों की लागत बीमाकर्ताओं के लिए सामर्थ्य और लाभप्रदता पर प्रभाव डालती है।

आगे की राह

- **वित्तीय साक्षरता बढ़ाएँ:** जनसँख्या के बीच बीमा उत्पादों की समझ बढ़ाने के लिए शैक्षिक कार्यक्रम संचालित करें।
- **विनियमों को सरल बनाएं:** उपभोक्ता सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए उत्पाद अनुमोदन को तेज़ और कम जटिल बनाने के लिए नियामक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करें।
- **दावा निपटान में सुधार:** विश्वास कायम करने और विवादों को कम करने के लिए तेज़, पारदर्शी और अधिक कुशल दावा प्रसंस्करण सुनिश्चित करें।
- **वितरण नेटवर्क का विस्तार करें:** वंचित ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों तक पहुंचने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म तथा मोबाइल प्रौद्योगिकी का लाभ उठाएं।
- **स्वास्थ्य कवरेज बढ़ाएँ:** गंभीर बीमारियों, अस्पताल में भर्ती होने और उपचार के बाद की देखभाल को शामिल करने के लिए कवरेज का विस्तार करें।

Source: IE

वैश्विक वेतन रिपोर्ट 2024-25: ILO

सन्दर्भ

- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) ने वैश्विक वेतन रिपोर्ट 2024-25 जारी की है।

परिचय

- वैश्विक वेतन रिपोर्ट ILO द्वारा जारी एक वार्षिक प्रकाशन है। पहला संस्करण 2008 में प्रकाशित हुआ था।
- यह विश्व भर में और विभिन्न क्षेत्रों में वेतन प्रवृत्तियों पर एक विस्तृत नज़र प्रदान करता है, वेतन असमानता एवं वास्तविक वेतन वृद्धि में बदलाव पर प्रकाश डालता है।

रिपोर्ट की प्रमुख बातें

- **वेतन असमानता में कमी:** 2000 के बाद से विश्व भर के लगभग दो-तिहाई देशों में वेतन असमानता 11.1% प्रति वर्ष की औसत दर से कम हुई है।
- **वैश्विक वेतन में वृद्धि:** हाल के दिनों में वैश्विक वेतन मुद्रास्फीति की तुलना में तेजी से बढ़ा है।
  - वैश्विक वास्तविक मजदूरी में पिछले वर्ष 1.8% की वृद्धि हुई, जबकि अनुमान 2024 में 2.7% की वृद्धि तक पहुंच गया है, जो 15 वर्षों में सबसे अधिक वृद्धि है।
- **विकास में क्षेत्रीय असमानता:** अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका और यूरोप के कुछ हिस्सों में स्थिर या नकारात्मक वास्तविक वेतन वृद्धि दर्ज की गई।
- **लगातार असमानता:** कम आय वाले देश उच्च आय वाले देशों की तुलना में काफी अधिक वेतन असमानता से पीड़ित हैं, लगभग 22% श्रमिक औसत प्रति घंटा वेतन के आधे से भी कम कमाते हैं।
- **उत्पादकता और वेतन के बीच अंतर:** 1999 और 2024 के बीच उच्च आय वाले देशों में उत्पादकता में 29% की वृद्धि के बावजूद, वास्तविक वेतन में केवल 15% की वृद्धि हुई है, जो श्रमिकों के साथ उत्पादकता लाभ को समान रूप से साझा करने में विफलता को उजागर करता है।
- **निरंतर लिंग वेतन अंतर:** महिलाएं, विशेष रूप से निम्न-मध्यम आय वाले देशों में, अनौपचारिक, अनिश्चित और कम वेतन वाले कार्यों में अधिक प्रतिनिधित्व के कारण वेतन असमानता से असमान रूप से प्रभावित रहती हैं।
- **भारतीय परिदृश्य:**
  - भारत में कम वेतन वाले वेतनभोगी श्रमिकों और कम वेतन वाले गैर-वेतन वाले श्रमिकों की हिस्सेदारी में 2008 और 2018 के बीच औसतन 6.3% एवं 12.7% की वार्षिक दर से गिरावट आई है।
  - कम वेतन पाने वाले श्रमिकों की हिस्सेदारी - जो देश में औसत प्रति घंटा वेतन का 50% से कम कमाते हैं - भारत में 9.5% है।
  - वहीं, पाकिस्तान के लिए यह 9.4%, नेपाल के लिए 10.5%, बांग्लादेश के लिए 11.2%, भूटान के लिए 13.7% और श्रीलंका के लिए 25.9% है।
- **विश्लेषण:**
  - सकारात्मक रुझान के बावजूद, विश्व भर में महत्वपूर्ण वेतन अंतर बरकरार है।
  - इस तरह के सकारात्मक परिणाम 2022 में देखी गई -0.9% की नकारात्मक वैश्विक वेतन वृद्धि की तुलना में उल्लेखनीय सुधार का संकेत देते हैं।
  - उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में मजबूत विकास का अनुभव किया है।
- **सुझाव**
  - न्यूनतम वेतन समायोजन को मुद्रास्फीति के प्रति अधिक संवेदनशील होने की आवश्यकता है, विशेष रूप से कम वेतन पाने वालों की सुरक्षा के लिए।
  - कार्य के अनिश्चित और असुरक्षित रूपों को संबोधित करने के लिए मजबूत श्रमिक सुरक्षा, नीतियां और नियम।
  - लैंगिक वेतन अंतर को कम करने और समान मूल्य के काम के लिए समान वेतन सुनिश्चित करने की कार्रवाई।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के बारे में

- यह एक संयुक्त राष्ट्र एजेंसी है जिसकी स्थापना 1919 में प्रथम विश्व युद्ध समाप्त करने वाली वर्साय

की संधि के हिस्से के रूप में की गई थी, और यह 1946 में संयुक्त राष्ट्र की पहली विशेष एजेंसी बन गई।
- इसके 187 सदस्य देश हैं।
- यह श्रम मानक निर्धारित करता है, नीतियां विकसित करता है और सभी महिलाओं एवं पुरुषों के लिए सभ्य कार्य को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम तैयार करता है।
- यह एकमात्र त्रिपक्षीय संयुक्त राष्ट्र एजेंसी है जो सरकारों, नियोक्ताओं और श्रमिकों को एक साथ लाती है।
- इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में है।
- **प्रमुख रिपोर्ट:** विश्व रोजगार और सामाजिक आउटलुक (WESO), वैश्विक वेतन रिपोर्ट, विश्व सामाजिक सुरक्षा रिपोर्ट, विश्व रोजगार और युवाओं के लिए सामाजिक आउटलुक, कार्य की विश्व रिपोर्ट।

Source: BS

भारत में गिग और प्लेटफ़ॉर्म वर्कर्स की संख्या

समाचार में

- सरकार ने कहा कि देश में गिग वर्कर्स और प्लेटफॉर्म वर्कर्स की संख्या 2029-30 तक बढ़कर 23.5 मिलियन होने की संभावना है।

गिग वर्कर क्या हैं?

- गिग वर्कर वे व्यक्ति होते हैं जो प्रायः ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से अस्थायी या लचीले रोजगारों में संलग्न होते हैं।
- वे गिग अर्थव्यवस्था का हिस्सा हैं, जो पारंपरिक, पूर्णकालिक रोजगार के बजाय फ्रीलांस, अल्पकालिक या ऑन-डिमांड कार्य की विशेषता है।
    - भारत में गिग अर्थव्यवस्था में हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है, जो डिजिटल प्रौद्योगिकियों को व्यापक रूप से अपनाने और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के प्रसार से प्रेरित है।
- गिग और प्लेटफ़ॉर्म अर्थव्यवस्था महत्वपूर्ण विकास और रोजगार संभावनाओं वाला एक उभरता हुआ क्षेत्र है।

भारत में स्थिति

- नीति आयोग की रिपोर्ट "इंडियाज़ बूमिंग गिग एंड प्लेटफ़ॉर्म इकोनॉमी" (जून 2022) के अनुसार, 2020-21 में भारत में 7.7 मिलियन गिग और प्लेटफ़ॉर्म कर्मचारी थे, जिनमें महिलाएं भी शामिल थीं।
- आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21 के अनुसार, भारत फ्लेक्सी-स्टाफिंग (गिग और प्लेटफॉर्म वर्क) के मामले में विश्व के सबसे बड़े देशों में से एक बन गया है। इस प्रकार के कार्य के बढ़ते रहने की उम्मीद है, विशेषकर ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों के विस्तार के साथ।

प्रभाव

- **मैक्रो:** गिग इकॉनमी का भारत की अर्थव्यवस्था पर बहुत प्रभाव पड़ा है.
    - इसने लाखों लोगों को, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, रोजगार के अवसर प्रदान किये हैं
- **माइक्रो:** गिग कार्य श्रमिकों के लिए लचीलापन, स्वतंत्रता और अतिरिक्त आय अर्जित करने की क्षमता सहित कई लाभ प्रदान करता है।

- कई गिग कर्मचारी अपना स्वयं का शेड्यूल निर्धारित करने और एक साथ कई परियोजनाओं पर कार्य करने की स्वतंत्रता की सराहना करते हैं।

चुनौतियां

- भारत में गिग श्रमिकों ने राजस्व बंटवारे, कार्य के घंटे और रोजगार की स्थिति जैसे मुद्दों पर विरोध प्रदर्शन किया है।
  - इन मुद्दों को मौजूदा कानूनी ढांचे के अंदर संबोधित करना मुश्किल है, जो पारंपरिक नियोक्ता-कर्मचारी संबंधों के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **कानूनी सुरक्षा का अभाव:** रोजगार संबंधों को मान्यता दिए बिना, गिग श्रमिकों के पास श्रम कानून सुरक्षा, जैसे व्यावसायिक सुरक्षा और स्वास्थ्य मानक आदि तक पहुंच नहीं है।
- **आय अस्थिरता:** न्यूनतम कमाई की कोई गारंटी नहीं है, और कर्मचारी लगातार कमाई नहीं कर सकते हैं, भले ही वे लंबे समय तक उपलब्ध हों।
- **अनियमित काम के घंटे:** ऐप-कैब ड्राइवरों की तरह गिग कर्मचारी अक्सर देर रात या सुबह जल्दी कार्य करते हैं, जिससे दुर्घटनाएं सहित सुरक्षा संबंधी चिंताएं उत्पन्न होती हैं।

मापन

- पहली बार, सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 'गिग वर्कर्स' और 'प्लेटफ़ॉर्म वर्कर्स' के लिए परिभाषाएँ प्रदान करती है और उनसे संबंधित प्रावधानों की रूपरेखा तैयार करती है।
- सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 में गिग और प्लेटफ़ॉर्म वर्कर्स के लिए सामाजिक सुरक्षा उपाय तैयार करने का प्रावधान शामिल है, जिसमें निम्नलिखित क्षेत्र शामिल हैं:
  - जीवन और विकलांगता कवर
  - दुर्घटना बीमा
  - स्वास्थ्य एवं मातृत्व लाभ
  - बुढ़ापे की सुरक्षा

निष्कर्ष और आगे की राह

- भारत में गिग अर्थव्यवस्था एक गतिशील और बढ़ता हुआ क्षेत्र है जो श्रमिकों और व्यवसायों के लिए समान रूप से कई अवसर प्रदान करता है।
- हालाँकि, इसकी क्षमता का पूरी तरह से दोहन करने के लिए, गिग श्रमिकों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना और एक सहायक नियामक ढांचा बनाना आवश्यक है।
- सही नीतियों एवं पहलों के साथ, गिग अर्थव्यवस्था भारत की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है और लाखों लोगों के लिए स्थायी रोजगार प्रदान कर सकती है।

Source :Air

संक्षिप्त समाचार

रामप्पा मंदिर

समाचार में

- केंद्र ने पूंजी निवेश के लिए राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को विशेष सहायता (SASCI) योजना के तहत रामप्पा सर्किट के विकास के लिए ₹141 करोड़ के ऋण को मंजूरी दी।

रामप्पा मंदिर के बारे में

- **संक्षिप्त विवरण:** रामप्पा मंदिर, जिसे रुद्रेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, काकतीय राजवंश की वास्तुकला कौशल का एक शानदार प्रमाण है।
  - मंदिर के इष्टदेव रामलिंगेश्वर स्वामी हैं।
  - तेलंगाना के पालमपेट में स्थित, 13वीं सदी के इस मंदिर को 2021 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में अंकित किया गया था।

- **प्रमुख विशेषताएं:**
  - यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट मूर्तियों, देवी-देवताओं, नर्तकियों और पौराणिक प्राणियों को चित्रित करने के लिए प्रसिद्ध है।
  - मंदिर की नींव में प्रयोग की गई "सैंडबॉक्स तकनीक" इंजीनियरिंग का चमत्कार है। काकतीय ने वेसर वास्तुकला की चालुक्य शैली को अपनाया।
    - सैंडबॉक्स तकनीक में भवन निर्माण से पहले एक गड्ढे (नींव के लिए खोदा गया) को रेत-चूने, गुड़ (बांधने के लिए), और करक्कया (काली हरड़ फल) के मिश्रण से भरना शामिल है।
    - मंदिर के निचले हिस्से का निर्माण लाल बलुआ पत्थर से किया गया है।
    - खंभे बेसाल्ट से बने हैं, जबकि सफेद गोपुरम हल्की ईंटों से बना है, जिनके बारे में कहा जाता है कि ये पानी पर तैरती हैं, जो उस समय की उन्नत इंजीनियरिंग विधियों को प्रदर्शित करती हैं।
  - गोपुरम (मंदिर टॉवर) मंदिर की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। हल्की ईंटों से निर्मित, यह न केवल एक संरचनात्मक चमत्कार है, बल्कि इसका सौंदर्य संबंधी महत्व भी है।
  - रुद्रेश्वर मंदिर में नियोजित प्रवेश द्वार शैली काकतीय क्षेत्र के लिए अद्वितीय है और दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला में अत्यधिक विकसित सौंदर्य बोध को दर्शाती है।

Source: TH

ज्योतिबा फुले

सन्दर्भ

- 28 नवंबर को महान भारतीय कार्यकर्ता और सुधारक, ज्योतिबा फुले की पुण्य तिथि है।

ज्योतिबा फुले के बारे में:

- **जन्म:** 11 अप्रैल, 1827 को खतगुन गांव में जो आज महाराष्ट्र के सतारा जिले में है।
- **शीर्षक:** उनका परिवार 'माली' जाति से था और उनका मूल शीर्षक 'गोरहे' था। 11 मई, 1888 को उन्हें महाराष्ट्रीयन सामाजिक कार्यकर्ता विट्ठलराव कृष्णाजी वंदेकर द्वारा महात्मा की उपाधि से सम्मानित किया गया था।
- **विचारधारा और प्रभाव:** उनकी विचारधारा स्वतंत्रता, समतावाद और समाजवाद पर केंद्रित थी। उन्होंने थॉमस पेन की पुस्तक द राइट्स ऑफ मैन से प्रेरणा ली।
- **विवाह:** जब वे केवल 13 वर्ष के थे तब उनका विवाह सावित्रीबाई से कर दिया गया। इस जोड़े ने 1848 में पुणे के भिड़ेवाड़ा में लड़कियों के लिए देश का पहला स्कूल स्थापित किया।
- **बालहत्या प्रतिबंधक गृह:** 1863 में, ज्योतिबा और सावित्रीबाई ने बालहत्या प्रतिबंधक गृह की शुरुआत की, जो भारत का पहला गृह था जो शिशुहत्या पर रोक लगाने एवं गर्भवती ब्राह्मण विधवाओं तथा बलात्कार पीड़ितों का समर्थन करने के लिए समर्पित था।
- **सत्यशोधक समाज:** फुले ने अपने अनुयायियों के साथ 1873 में सत्यशोधक समाज का गठन किया, जिसका अर्थ था 'सत्य के खोजी' और यह दलितों के सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए समर्पित था।
    - ऐसा माना जाता है कि यह फुले ही थे जिन्होंने पहली बार 'वर्ण व्यवस्था' के बाहर रखे गए उत्पीड़ित लोगों के चित्रण के लिए 'दलित' शब्द का प्रयोग किया था।
- **साहित्यिक कृतियाँ:** गुलामगिरी (गुलामी), शेतकारायचा आसुद (कल्टीवेटर व्हिपकॉर्ड), और तृतीया रत्न।

Source: IE

बाल्टिक सागर

समाचार में

- स्वीडन ने बाल्टिक सागर में दो समुद्री डेटा केबलों को हाल ही में हुई क्षति के बारे में समझाने के लिए औपचारिक रूप से चीन से सहयोग का अनुरोध किया है।

बाल्टिक सागर के बारे में

- बाल्टिक सागर पृथ्वी पर सबसे नया समुद्र है, जिसका निर्माण 10,000-15,000 वर्ष पहले ग्लेशियरों के पीछे हटने से हुआ था।
- बाल्टिक सागर कृत्रिम रूप से श्वेत सागर से श्वेत सागर नहर द्वारा और उत्तरी सागर से कील नहर द्वारा जुड़ा हुआ है।
- **स्थान:** यह उत्तरी यूरोप में है, जिसकी सीमा डेनमार्क, एस्टोनिया, फ़िनलैंड, जर्मनी, लातविया, लिथुआनिया, पोलैंड, रूस और स्वीडन से लगती है।
    - इसमें बोथनिया की खाड़ी, बोथनिया की खाड़ी, फिनलैंड की खाड़ी, रीगा की खाड़ी और ग्दान्स्क की खाड़ी शामिल हैं।

- **विशेषताएँ:**
  - **खारा पानी:** यह सबसे बड़े खारे जल निकायों में से एक है, जहां उत्तर-पूर्वी अटलांटिक का खारा पानी नदियों और झरनों के मीठे पानी के साथ मिलता है।
    - **पारिस्थितिकी तंत्र:** बाल्टिक सागर में विविध वनस्पतियों और जीवों के साथ एक अद्वितीय और संवेदनशील समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र है।
    - **आर्थिक महत्व:** भोजन, आय, मनोरंजन और कल्याण प्रदान करता है, लेकिन पर्यावरणीय गिरावट के कारण खराब प्रदर्शन का सामना करना पड़ता है।

- **चिंताएँ:**
  - **पर्यावरणीय प्रभाव:** बाल्टिक सागर का 94% हिस्सा यूट्रोफिकेशन से प्रभावित है, जिससे मृत क्षेत्र बन गए हैं।
    - बाल्टिक सागर समुद्री घास पहल बाल्टिक सागर में समुद्री घास के मैदानों को पुनर्स्थापित करने के लिए स्थानीय नागरिकों को प्रशिक्षित करने में सहायता करती है जो जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकती है।
  - **जैव विविधता में गिरावट:** कॉड की जनसँख्या कम हो गई है, यूरोपीय ईल विलुप्त होने के करीब है, और केवल लगभग 500 बाल्टिक हार्बर जनसँख्या बची है।
  - **जलवायु परिवर्तन:** ख़राब बाल्टिक सागर अधिक ग्रीनहाउस गैसें छोड़ सकता है, जिससे जलवायु परिवर्तन बिगड़ सकता है।

Source :TH

कोरगा जनजातीय समुदाय

समाचार में

- केरल सरकार ने कोरगा समुदाय को भूमि का पट्टा (पट्टा) प्रदान करने के लिए ऑपरेशन स्माइल नामक एक परियोजना शुरू की है।
  - भूमि अधिकार सुरक्षित करके, कोरगा समुदाय सरकारी आवास योजनाओं, कृषि ऋण और अन्य कल्याणकारी कार्यक्रमों तक पहुंच प्राप्त कर सकता है।

कोरगा जनजाति के बारे में

- कोरगा समुदाय एक विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) है जो मुख्य रूप से केरल के कासरगोड जिले और कर्नाटक के कुछ हिस्सों में रहता है।

- PVTG की पहचान जनजातीय मामलों के मंत्रालय द्वारा की जाती है और वर्तमान में 75 PVTG समुदाय हैं।
- 1973 में, ढेबर आयोग ने आदिम जनजातीय समूह (PTGs) (2006 में, इसका नाम बदलकर विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह कर दिया गया) को एक अलग श्रेणी के रूप में बनाया, जो जनजातीय समूहों के बीच सबसे कम विकसित हैं।

- वे मुख्य रूप से तुलु बोलते हैं और उनके पास पारंपरिक गीत, नृत्य और अनुष्ठानों सहित एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है।

Source: TH

नियम 267

समाचार में

- राज्यसभा में नियम 267 को लागू करने की बढ़ती आवृत्ति के कारण संसदीय कार्यवाही में व्यवधान और देरी हो रही है।

परिचय

- राज्यसभा के प्रक्रिया नियमों का नियम 267 सदस्यों को अत्यावश्यक सार्वजनिक महत्व के मामले पर चर्चा करने के लिए सदन के सामान्य कामकाज को निलंबित करने के लिए एक प्रस्ताव लाने की अनुमति देता है।

Source: PIB

नेफिथ्रोमाइसिन(Nafithromycin)

समाचार में

- मुंबई स्थित वॉकहार्ट लिमिटेड ने जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (BIRAC) के सहयोग से नेफिथ्रोमाइसिन विकसित किया।
  - जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (BIRAC) वास्तव में जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) द्वारा स्थापित एक सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है।

परिचय

- यह मिकनाफ ब्रांड नाम से उपलब्ध होगा।
- इसे स्ट्रेप्टोकोकस निमोनिया जैसे दवा प्रतिरोधी बैक्टीरिया के कारण होने वाले सामुदायिक-अधिग्रहित बैक्टीरियल निमोनिया (CABP) के उपचार के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- रोगाणुरोधी प्रतिरोध एक गंभीर वैश्विक स्वास्थ्य खतरा है। दवा-प्रतिरोधी बैक्टीरिया के उद्भव ने सामान्य संक्रमणों का उपचार करना कठिन बना दिया है।

Source: Print

आठ प्रमुख उद्योगों का सूचकांक (ICI)

समाचार में

- आठ प्रमुख उद्योगों (ICI) के सूचकांक में अक्टूबर 2023 की तुलना में अक्टूबर 2024 में 3.1% की वृद्धि देखी गई।

आठ प्रमुख उद्योगों के सूचकांक (ICI) के बारे में

- ICI में कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, उर्वरक, इस्पात, सीमेंट और बिजली जैसे उद्योग शामिल हैं, जो औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) का 40.27% हिस्सा हैं।
    - औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) एक सूचकांक है जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में विनिर्माण गतिविधि को ट्रैक करता है।
    - IIP डेटा प्रत्येक महीने CSO द्वारा संकलित और प्रकाशित किया जाता है। CSO या केंद्रीय सांख्यिकी संगठन सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) के तहत कार्य करता है।
    - वर्ष 2017 में आधार वर्ष को 2004-05 से बदलकर 2011-12 कर दिया गया।
- आठ प्रमुख उद्योगों का सूचकांक (ICI) भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा अपने आर्थिक सलाहकार कार्यालय के माध्यम से जारी किया जाता है। यह सूचकांक मासिक रूप से प्रकाशित किया जाता है।

Source: PIB

CAFE मानदंड

समाचार में

- भारत सरकार ने वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए आठ प्रमुख कार निर्माताओं द्वारा कड़े CAFE मानदंडों का अनुपालन न करने की पहचान की है, जिसके परिणामस्वरूप प्रस्तावित जुर्माना लगाया जाएगा।

CAFE मानदंडों के बारे में

- **संक्षिप्त विवरण:**
    - ऊर्जा संरक्षण अधिनियम, 2001 के तहत 2017 में प्रस्तुत किया गया। CAFE मानदंड वाहनों की कॉर्पोरेट औसत ईंधन खपत (लीटर / 100 किमी में मापा गया) को एक वित्तीय वर्ष में मूल उपकरण निर्माता (OEM) द्वारा बेचे गए सभी वाहनों के औसत वजन से जोड़ते हैं। .
    - यह गणना निर्माता द्वारा बेचे जाने वाले वाहनों के पूरे बेड़े में बेहतर माइलेज और कम उत्सर्जन प्राप्त करने पर केंद्रित है।
- **उद्देश्य:**
    - वाहनोंचरण I (2017-2022): मानकों को लागू करने और प्रारंभिक अनुपालन प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
    - चरण II (2022 से): सख्त ईंधन दक्षता और उत्सर्जन लक्ष्य लागू करता है।
    - से CO_2 उत्सर्जन कम करें।
    - ईंधन की कम खपत.
    - तेल पर निर्भरता कम करें और वायु प्रदूषण का समाधान करें।
- **प्रयोज्यता:**
    - 3,500 किलोग्राम से कम वजन वाले वाहनों पर लागू।
    - इसमें पेट्रोल, डीजल, तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (LPG), और संपीड़ित प्राकृतिक गैस (CNG) वाहन शामिल हैं।
- **अनुपालन चरण:**
    - चरण I (2017-2022): मानकों को लागू करने और प्रारंभिक अनुपालन प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

- चरण II (2022 से): सख्त ईंधन दक्षता और उत्सर्जन लक्ष्य लागू करता है।

CAFE मानदंडों का प्रभाव

- **ईंधन दक्षता:** अधिक ईंधन-कुशल वाहनों के विकास और उत्पादन को प्रोत्साहित करता है।
- **उत्सर्जन में कमी:** ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और वायु गुणवत्ता में सुधार में योगदान देता है।
- **तकनीकी प्रगति:** ऑटोमोटिव प्रौद्योगिकी, जैसे हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों में नवाचार को बढ़ावा देता है।
- **उपभोक्ता लाभ:** कम ईंधन लागत और कम पर्यावरणीय प्रभाव।

Source: IE

भारतीय सेना द्वारा एकलव्य डिजिटल प्लेटफॉर्म लॉन्च

समाचार में

- भारतीय सेना का एकलव्य मंच सैन्य शिक्षा और प्रशिक्षण के आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
  - यह भारतीय सेना की "परिवर्तन का दशक" पहल और 2024 के लिए भारतीय सेना की थीम "प्रौद्योगिकी अवशोषण का वर्ष" के साथ पूरी तरह से सामंजस्यपूर्ण है।

परिचय

- **द्वारा विकसित:** भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग और भू-सूचना विज्ञान संस्थान (BISAG-N)।
- **एकलव्य की मुख्य विशेषताएं:**
  - **पहुंच:** यह मंच देश भर के सेना अधिकारियों के लिए सुलभ है, जिससे प्रशिक्षण संस्थानों में शारीरिक उपस्थिति की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
  - **वैयक्तिकृत शिक्षण:** अधिकारी अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं और कैरियर लक्ष्यों के अनुरूप पाठ्यक्रमों एवं संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच सकते हैं।
  - **सतत सीखना:** मंच नवीनतम सैन्य सिद्धांतों, प्रौद्योगिकियों और सर्वोत्तम प्रथाओं पर नियमित अपडेट प्रदान करके निरंतर सीखने को बढ़ावा देता है।
  - **सहयोगात्मक शिक्षा:** एकलव्य चर्चा मंचों, वेबिनार और अन्य इंटरैक्टिव सुविधाओं के माध्यम से अधिकारियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है।

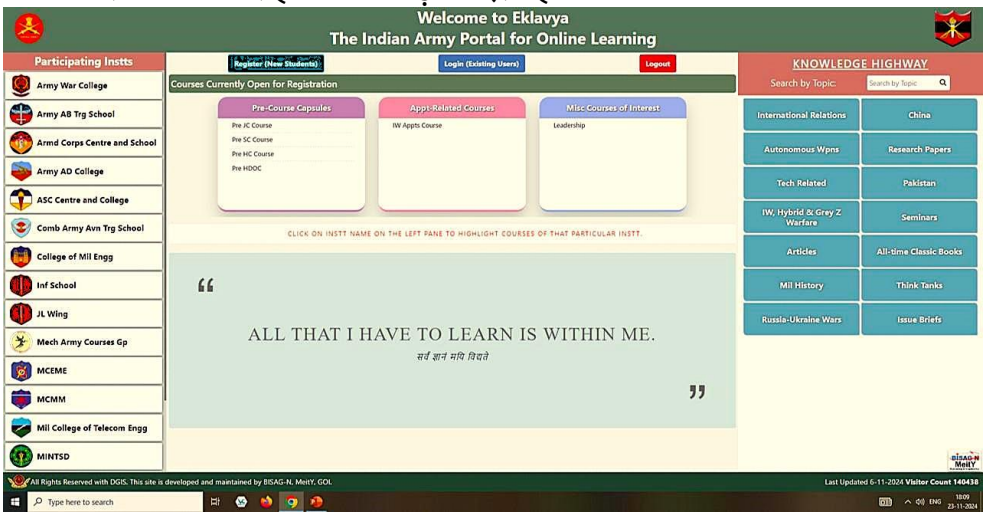

Source: ET

NEXT
IAS
हिन्दी